AD EDUXIAN JOURNAL

A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal

Google Scholar Indexing IF:3.125 (IIFS)

Vol (2), Issue (2), May-July 2025 *ISSN: 3048-7951*

मिथिला संस्कृतिः पर्यावरण, पर्यटन और विकास

डॉ0 राम विनय ठाकुर[1]

https://doi-ds.org/doilink/12.2025-91627968/ADEJ/V2/I2/RVT

Review:25/07/2025, Acceptance:27/08/2025 Published:04/09/2025

परिचयः विश्व सांस्कृतिक परिमण्डल में सरस व मधुर बोली के बल पर मिलनसार प्रवृति व शांति का संदेश देने वाला भूमि मिथिला है। व्यंजनों में तमहचूरा, छाछ की दही, माछ–मखान, तिलकोर का तड़ुआ व आम के अमावट के रसास्वादन से आतिथ्य सत्कार करने की परम्परा मिथिला संस्कृति की पहचान है। अपनी रीति–रिवाजों, प्रथा–परम्पराओं, संस्कारों, पर्व–त्योहारों एवं धार्मिक अनुष्ठानों में पर्वतों, नदियों, मिट्टियो, वृक्षों, पशुओं व पक्षियों के प्रति आदर, श्रद्धा का भाव जोड़नेवाली संस्कृति मिथिला है। माथे पर पाग, मूँह में पान, दलान व मचान पर ताश खेलने में मग्न रहनेवाला लोग मिथिला के हैं। वट को सावित्री के रूप में, पीपल को वासुदेव के रूप में, दूभ घास को अक्षय सुहाग के रूप में, धरती को सीता की माता के रूप में, हिमालय को पार्वती के पिता के रूप में, जंगल को देवी के रूप में तथा नदियों को मनौतियों के रूप में पूजने वाली धरती मिथिला हैं।

कल–कल बहती बागमती, कमला, कोसी, बलान व अधवारा से सिंचित व ऊर्वर भूमि, जहाँ विद्यापतिक कोकिल तान. याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रीय, आचायी, मण्डन भारती, गौतम व भामती की पहचान अक्षुण्ण है वह मिथिला है। तोते द्वारा वैदिक गान, पनघट पर ग्राम्य महिलाओं द्वारा संस्कृत में वार्तालाप की पहचान से समृद्ध भूमि मिथिला है। घर–घर में माता शक्ति, आँगन में तुलसी–चौड़ा, गाँव–गाँव में ठाकुरवाड़ी, ब्रह्म स्थान तथा ग्राम्य देवी तथा अनन्त शिवालयों से निकलने घड़ी घंटों व शंखों की ध्वनि से रोग–व्याधिमुक्त, कीटाणु से प्रतिरक्षित होने वाला क्षेत्र मिथिला है।

1. स्थिति व विस्तार : सांस्कृतिक क्षेत्र का विस्तार 25^0–28′ उत्तरी से 26^0–52′°उत्तरी अक्षांश तक एवं 84^0–56′ पूरबी देशांतर से 86^0–46′ पूरबी देशांतर तक है। क्षेत्रफल 4800 वर्ग किमी० तथा उत्तर में हिमालय से दक्षिण में गंगा तक 160 किमी0 एवं पूरब में कोसी महानंदा से पश्चिम में गंडक तक 300 किमी0 में फैला है। नेपाल के रोतहट, सरलाही, सप्तरी, महोत्तरी, जलेश्वर तथा बिहार के दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सहरसा, सुपौल. समस्तीपुर एवं पूर्वी मुजफ्फरपुर इस संस्कृति की हृदयस्थली के रूप में चिन्हित है।

2. विधि तंत्रः उद्धृत सामग्री का संकलन आँकड़ों के प्राथमिक स्रोत, प्रश्नावली, साक्षात्कार व व्यक्तिगत अवलोकन तथा द्वितीयक स्रोत के रूप में, काव्यग्रंथ, पत्रिका, व दैनिक समाचार पत्र से संबंद्ध है। यहाँ की संस्कृति, पर्यावरण, पर्यटन व विकास से अर्न्तसंबंधित है, उसे विश्लेषण द्वारा स्पष्ट किया गया है।

3. उद्देश्यः विकास की अंधी दौड़ में क्षरित हो रहे वन, विलुप्त हो रही पशु–पक्षियों तथा उत्पन्न परिस्थितिकीय संकट के कारण बदलते जलवायु, बिगड़ते मौसम एवं घटित आपदाओं के मूल में आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रति जागरूकता लाना है। मिथिला संस्कृति एक विरासत के रूप में प्रकृति के महत्वपूर्ण घटकों जैसे अजैव सूर्य, पृथ्वी, वायु एवं जल तथा जैव घटकों के घास, पेड़, झारियों, जंगलों तथा पशु–पक्षियों के प्रति अगाध भावनात्मक संबंधों के साथ देव तुल्य मानकर पूजते आया है। यह

[1] एम0ए0,.पी–एच0डी0, एल0एन0एम0यू0, दरभंगा, यू0जी0सी–नेट, मो0– 9801894240।

भाव पर्यावरण मित्रता का परिचायक है। अस्तु, यह संस्कृति विश्व संस्कृति के लिए पर्यावरणीय स्वच्छता के दिशा में शाश्वत प्रेरणा के केन्द्र बिन्दु है। जो वर्तमान घटित आपदाओं जैसे ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन क्षय, अम्ल वर्षा, ध्रुवीय वर्फ के पिघलना, अनावृष्टि तथा सूखे एवं अकाल को नियंत्रित करने वाला साबित हो सकता है।

4. अध्ययन क्षेत्रः मिथिला संस्कृति में क्या हैं? इसकी चर्चा से पहले यह जानना लाजिमी है कि यहाँ की संस्कृति में क्या नहीं है। यहाँ की भौगोलिक बनावट, प्राकृतिक वनस्पति एवं जलवायु का प्रभाव, यहाँ के भाषा, रीति–रिवाज, प्रथा–परम्पराएँ, खान–पान, कृषि, धार्मिक मान्यताएँ, पर्यटन और विकास पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः यहाँ के संस्कृति के पर्यावरणीय स्वरूपों का विस्तारपूर्वक अध्ययन इस तरह किया जा सकता है–

v- भाषा व बोली– सरस एवं मीठी बोली के कारण लोग मिलनसार प्रवृति के हैं, भाषा व बोली का ही प्रभाव है कि यह क्षेत्र अमूनन दुनियाँ का शांत क्षेत्र है। मैथिली भाषा की बोली के प्रवाह एवं उच्चारण की रफ्तार कर्णकटु नहीं, बल्कि कर्णप्रिय हैं, जो ध्वनि प्रदूषण से रहित है। यहाँ मैथिली भाषा के दो मुख्य बोली प्रचलित है, मूल मैथिली–पूर्वी मिथिलांचल एवं अवहट्ट मैथिली। इस भाषा व बोली संस्कृति के आगोश में अंगिका, वज्जिका, भोजपुरी, असमियाँ, बंगला व उड़िया संस्कृति भी सम्मिलित है।

कभी इसे मात्र बोली कहा गया था, लेकिन आज यह राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर अपनी परचम फहराने लगी है। मैथिली में महाकाव्य व रामायण की रचना, मैथिली में विज्ञापन का जादुई असर सिर–चढ़कर बोलने लगा है। गैर मैथिली क्षेत्र के छात्र मैथिली लेकर यू.पी.एस.सी. परीक्षा में स्थान बनाने लगे है। इस वर्ष घोषित यू.पी.एस.सी. के परिणाम को देखें तो पता चलेगा कि खड़गपुर, लखनऊ व दिल्ली में अध्ययनरत छात्र मैथिली लेकर उत्तीर्ण हुए है, एवं इस पर शोध करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। मैथिली साहित्य अकादमी, अर्न्तराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, मैथिली प्रेस परिषद् की स्थापना तथा बिहार के सर्वाधिक लोगों की भाषा मैथिली नित नए कीर्तिमान बनाने लगी है। मैथिली में निर्मित प्रथम फिल्म कन्यादान की पहचान लेकर मॉलीबुड से वॉलीवुड तक लोकप्रियता बना लिया है तथा हॉलीवुड में जगह बना लेगी ऐसा विश्वास है।

vi-पर्व–त्योहार – यहाँ प्रत्येक दिन, कोई न कोई व्रत, पर्व या त्योहार मनाये जाते है। फिर भी कुछ पर्व ऐसे हैं, जो सिर्फ यही बनाये जाते है, अगर यहाँ के अलावा कहीं मनाये जाते भी हैं, तो पर्यावरण व प्रकृति के प्रति समर्पण का जो भाव यहाँ देखा जाता है, वह अन्य संस्कृति में नदारद है। यहाँ के प्रमुख पर्व–चौठचन्द में फल–फूल के साथ चाँद–दर्शन, अनन्त पूजा में समुद्र मंथन व अमृत प्राप्ति, जीतिया में माता द्वारा पुत्र के दीर्घायु व सफलता की कामना के साथ झिमनी पत्तों पर चूड़ा दही व अंकुड़ी का जल प्रवाह, विजय दशमी के यात्रा में नीलकंठ दर्शन, नागपंचमी पर सर्प पूजा, भातृ द्वितीया में गोबर लेपन, अरिपन व तिलकोर व्यंजन द्वारा भातृत्व स्नेह का प्रदर्शन, गोबर्द्धन पूजा में गोवंश की पूजा, अक्षयनौमी में आंवला वृक्ष के नीचे भोज, वट सावित्री में बरगद पूजा, मिट्टी के अनगिनत महादेव का बेल–पत्र से पूजा, कोजगरा में, मखान, पान के साथ सफल दामपत्य की कामना पर्यावरण से जुड़ा है।

vii- रीति–रिवाज व प्रथा परम्पराएँ : पुत्र–प्राप्ति व छठी एवं मुण्डन के लिए कमला–कोसी से मन्नतें मानना एवं पूजन, उपनयन, विवाह संस्कारों में आम महुआ पूजन, बाँस पूजन, नदी–तालाबों के लट पर मटकोर, मांगलिक अवसर एवं बेटी की विदाई पर दूभ घास खोईंछा में देने, मांगलिक उत्सव पर आँगन व दलान के प्रांगण के गोबर लेपन पर्यावरणीय भाव से परिपूर्ण है।

viii- नृत्यः– यहाँ नृत्य के रूप में झिझिया, पमड़िया, विक्षिप्त, नचारी व लगनी प्रसिद्ध है। झिझिया में नारी समूह बनाकर मिट्टी के छिद्रित घड़ा में घी के दीये जलाकर, सिर पर रखकर दुष्ट आत्मा अर्थात् डायन योगिन के खिलाफ नृत्य करती हैं, मिट्टी के घड़ा व घी के दीये पर्यावरण के लिए अनुकूलन व सामूहिक रूप से घर से बाहर आकर नृत्य को महिला सशक्तिकरण रूप में देख सकते है। जन्मोत्सव पर स्त्री वेश में, नदी, जंगल, पेड़, पनघट व गाय तथा तोता के नाम से युक्त हास–परिहास मिश्रित गायन के साथ नृत्य की परम्परा है, जिसे पमड़िया नृत्य कहते है।

भगवान शंकर के नाम के साथ, हिमालय, जंगल, बेल, धतूर, बसहा, मयूर, सर्प व चंदन की चर्चा युक्त सुध–बुध खोने वाली गायन युक्त नृत्य विक्षिप्त या नचारी नृत्य कहा जाता है, जिसकी रचना विद्यापति के पदावली के साथ हुआ माना जाता है।

ix-लगनी व झरनी : मिथिला क्षेत्र में विवाह के अवसर पर प्राकृतिक रमणीयता, बारी–फुलवारी, नदी, पनघट, आमंत्रण के वर्णन के साथ किया जाना वाला नृत्य लगनी, व मुहर्रम के ताजियों के साथ, फसल की चर्चा व उमंग भरी नृत्य झरनी है।

x- लोकनृत्यः इसके अन्तर्गत सामा–चकेवा, जट–जटिन व किरतनियाँ प्रमुख है। भगवान कृष्ण की पुत्री शाम्बा की पक्षी रूप में सामा, व भाई के रूप चकेवा, वन के रूप वृंदावन बनाया जाता है। नदी, तालाब फुलवारी बगीचा के जिक्र से भरपुर गीतों के माध्यम से गाँव की बेटियाँ इन नृत्य में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेती आ रही है।

xi-जट–जटिनः पति–पत्नी के दाम्पत्य जीवन पर आधारित उतार–चढ़ाव, प्यार, मनुहार, गुस्सा, मिलन व विरह की झलकियों के साथ प्राकृतिक रमणीयता, कोयल, कागा, तोता व मयूर के जिक्र के साथ लोक नृत्य का मंचन होता है।

xii-लोक चित्रण की कलाः— यहाँ प्रचलित लोकचित्रण की कला में प्रकृति व पर्यावरण का अद्‌भुत सामंजस्य है। लोक चित्रांकन कला के अन्तर्गत कोहवर पेंटिंग, भित्ति—चित्र, अरिपन, एप्लिक तथा मधुबनी पेंटिंग विशेष प्रसिद्ध है। यहाँ की यह लोकचित्रांकन की कला—प्रकृति व पर्यावरण भाव, प्रधान होने के कारण विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना लिया है तथा विश्व चित्रकला के लिए जिज्ञासा का विषय बना रहा है।

xiii- कोहबर पेंटिंगः— दाम्पत्य सूत्र की सफलता से ओत—प्रोत यह पेंटिंग शादी के बाद, चार दिनों तक नव विवाहित जोड़ों के शयनकक्ष में बनाया जाता है, जिसे कोहबर कहा जाता है। कोहबर, पेंटिंग में प्राकृतिक रंगों व बांस की कूची की सहायता से सूर्य, चन्द्र, नौ—ग्रह, बाँस, कमल, तोता, कछुआ, हाथी, घोड़ा, चिड़िया, पान तथा वनस्पतियों, का चित्र बनाया जाता है। सूर्य, चन्द्र को शादी के साक्षी के रूप में, बाँस को वंश—वृद्धि के रूप में, कमल को नारी कोमलता, तोता को प्रेम, कछुआ को मिलन तथा मछली को नारी उर्वरता का प्रतीक माना जाता है। कोहबर पेंटिंग में अंधविश्वास से लड़ने के प्रतीक के रूप में नैना—योगिन का चित्रण भी प्रसिद्ध है।

2.भित्ति चित्रः— मांगलिक अवसरों पर मिट्टी के दिवालों पर प्राकृतिक रंगों से पौराणिक कथा पात्र तथा वनस्पतियों व विविध पशु पक्षियों का चित्रण होता है। चित्रण में मछली, कोयल, मोर, जलाशयों, वृक्षों व पशुओं की प्रधानता होती है। जो जैव, वन व पर्यावरणीय भाव को दर्शाता है।

3. अरिपन :— मिथिला के मांगलिक अवसरों व धार्मिक उत्सवों के मौके पर आँगन व दलान के प्रांगण को गाय के गांबर से लेपन उपरान्त चावल के घोल (पिठार) से अलंकृत रूप में, आकर्षक विधियों द्वारा जयमितीय चित्र बनाया जाता हैं, जो वैज्ञानिकता व पर्यावरण अनुकूलन के दृष्टि से काफी प्रभावी है। भूमि पूजन के प्रतीक में भूमि की यह शोभा गोबर की पर्यावरणीय महत्व तथा मिट्टी के प्रति भावात्मक लगाव तथा चावल के घोल मन—मस्तिष्क के स्वच्छता को दर्शाता है। 1934 ई0 में आयी भूकम्प तदुपरान्त ध्वस्त मकानों के सर्वेक्षण के क्रम में मधुबनी के तत्कालीन एस.डी.ओ., आर्चर ने जितवारपुर एवं उसके आसपास ध्वस्त दिवारों के चित्र को फोटो लेकर लंदन के सेमिनार में प्रस्तुत किया तथा 1967 में यह विश्व चित्रकला में स्थान बनाया।

4. एप्लिक कलाकृतिः— कपड़े के टुकड़ों को चादर, साड़ी, बेडशीट, पिलो—कभर, टेबुल क्लॉथ पर सुसज्जित कर उसमें चार—चाँद लगाने की कला मिथिला की विशेष पहचान है। यह कला मिथिला का पेटेंट हो चुका है और चीन के द्वारा इस कला को अपना कहने का दावा समाप्त हो गया है। संसद में भी इसे भौगोलिक उपदर्शन के रूप में मान्यता देकर इसके लिए अधिनियम पारित कर चुका है। इस तरह यह कला मिथिला के लोगों के लिए आर्थिक संबर्द्धन का स्रोत बन रहा है।

5. मधुबनी पेटंग या मिथिला पेंटिंगः— ग्रामीण महिलाओं द्वारा प्राकृतिक रंगों, जिसमें गोबर, गेंदा की पत्ती, पत्थर, कोयला, हल्दी, सरसों, श्रृंगार फूल के डंठलों तथा उड़हुल फूलों के रस से तैयार रंगों को बाँस की कूची से पौराणिक कथाओं के पात्र जैसे—सीता राम विवाह, राधा—कृष्ण लीला, एवं सती अनुसैया के चरित्र चित्रण का भाव भंगिमापूर्ण चित्रण किया जाता था, जिसमें प्राकृतिक दृश्यावलियों, पशुओं में हाथी, गाय, हिरण, नीलगाय, घोड़ा. पक्षियों में कोयल, नीलकंठ, तोता, मयूर, तथा वृक्षों में आम, केला, बाँस, पीपल, जलीय जीवों में मछली व कछुआ का चित्र बनाया जाता रहा है। आज यह चित्रकला ग्राम्य कला से विकसित होकर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पहचान का बन गया है। विश्व की महत्वपूर्ण आर्ट गैलरियों एवं संग्रहालयों में मधुबनी पेंटिंग बरबस आकर्षित करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कला बाजार में आज इसकी कीमत करोड़ों में आंकी जाती है। साथ ही लियोनार्दो—द—विंची के मोनालिसा स्पेन के पिकासो तथा जापान के इकेबाना कला को टक्कर देने के समकक्ष पहुँच रही है। इसके कलाकार पदम् श्री व पद्‌म विभूषण पुरस्कार पाकर गौरवान्वित हो रहे है। इस चित्रकला का आयाम विस्तृत होने लगा है और यह चित्र पौराणिक कथा से लेकर आज निम्नांकित क्षेत्रों को नियंत्रित कर ख्याति प्राप्त कर रही हैं वह क्षेत्र हैः—

1. आतंकी हमला व सुरक्षा बलों की बहादुरी पूर्ण कार्यवाही का चित्रण।
2. पर्यावरणीय अवनयन, वन विनाश, व ग्लोबल वार्मिंग का चित्रण।
3. प्राकृतिक व मानवीय आपदा का चित्रण
4. जनसमस्या एवं भ्रष्टाचार का चित्रण
5. एड्स जागरूकता का चित्रण
6. क्रिकेट लोकप्रियता का चित्रण
7. नारी सशक्तिकरण, उत्पीड़न व भ्रूण हत्या का मर्मस्पर्शी चित्रण।
8. परीक्षा कदाचार तथा तानाशाही का चित्रण आदि।

बढ़ती हुई दायरा तथा पर्यावरण अनुकूलन युक्त जीवन्त चित्रण के कारण यह न्ै।एए थ्तंदबमए तथा श्रंचंद तक अपनी पहचान बना लिया है। गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस की झांकी प्रस्तुति में इसका अहम स्थान मिल रहा है। डाक टिकटों, रेल जंक्शनों, पर मिथिला पेंटिंग का चित्र भी लोकप्रिय होने लगा है। इग्नू ने अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों में इसे सम्मिलित कर लिया है। बड़े—बड़े नगरों में मिथिला पेंटिंग्स से जुड़े कलाकृतियों के विक्रय के लिए मिथिला हाट लगाने की योजना बनाई जा रही है। इसके अतिरिक्त

सीकी कला व सुजनी कला भी मिथिला के नाम पेंटेंट हो चुका है और यह कला मिथिला के लोगों के आर्थिक विकास में सहायक बनने लगा है।

यूँ तो मिथिला में पर्यटकीय महत्व की अपार संभावनाएँ है, लेकिन मिथिला के कुछ प्रमुख पर्यटकीय स्थानों का मनोरम दृश्य इस प्रकार है :–

1 जनकपुरधाम – नेपाल

2. कुर्शेश्व स्थान – शिव मन्दिर

3. माँ श्यामा मन्दिर–दरभंगा

4. मखाना की खेती का दृश्य

5. मिथिला पेंटिंग

6. कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

7. ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

8. हराही पोखर, दरभंगा

1. धार्मिक पर्यटकीय क्षेत्र :—गाँव—गाँव में शिवालयों , शक्तिपीठों , ठाकुरवाडियों व अन्य धार्मिक आस्थओं से पूर्ण पर्यटकीय क्षेत्र का पुंज रूप मिथिला में मौजूद हैं। महत्वपूर्ण पर्यटकीय केन्द्रों का वर्णन निम्न रूपेण किया जा रहा हैं।

1. शिवालयः— मिथिला में शैव धर्म के अनुयायिओं व शिवालयों की भरमार हैं। जिनमें मधुबनी के कपिलेश्वर स्थान, जयनगर, के शिलानाथ, विस्फी के भैरवा महादेव, अन्धरामठ थाना क्षेत्र के मदनेश्वरस्थान, सौराठ में सोमनाथ मंदिर, लोहना के विदेश्वर स्थान, पंडौल के उग्रनाथ महादेव। दरभंगा में कुशेश्वरस्थान, देकुली में द्रवेश्वरनाथ महादेव व गंडेश्वर महादेव, पूर्वी चम्पारण में अरेराज, मुजफ्फरपुर में गरीबनाथ, सीतामढ़ी में हलेश्वरनाथ, मधेपुरा का सिंहेश्वर, सहरसा का उग्रतारा आदि प्रमुख महाशिवरात्रि में हजारों लाखों श्रद्वालू धार्मिक पर्यटक के रूप में आते है। जिसके कारण यह शैव पर्यटक के केन्द्र में रूप विकसित होने लगा हैं।

2. शक्तिपीठ— शक्ति की उपासना के लिए यह क्षेत्र प्रसिद्ध रहा है। शक्तिपूजन में वाम मार्ग के हावी होने कारण बलि—प्रथा तथा मछली खाने की रिवाज भी जोरों पर है। यहाँ के प्रमुख शक्तिपीठों में मधुबनी के निकट उच्चैठ भगवती की छिन्नास्तिक भगवती, निर्मली के निकट सखड़ा भगवती स्थान पर्यटकीय आकर्षण का केन्द्र है।

3. रामायण वर्णित स्थलः— मिथिला का अतीत गौरवशाली रहा है। यहाँ राजा जनक के विदेह गणराज्य—जनकपुर, जनक नंदनी सीता का जन्म स्थली सीतामढ़ी का पुरोराधाम, दरभंगा जिले के विस्फी प्रखण्ड के सिंघिया में श्रृंगी मुनी के आश्रम प्रसिद्व, पर्यटकीय आकर्षण का केन्द्र है।

2ण् ऐतिहासिक व पुरातत्विक स्थलः— गौतम बुद्ध की जन्म स्थली लुम्बनी (नेपाल) महावीर की भूमि वैशाली की लिच्छवी गणतंत्र, ऐतिहासिक महत्व के पर्यटन स्थल है वहीं बलिराजगढ़ का अवशेष पुरातात्विक महत्व से पूर्ण है।

3. आश्रायानी व अभयारण्यः— दरभंगा जिले के कुशेश्वर झील, बेगुसराय के काबुर झील, चम्पारण का सरैया मौन तथा अनगिनत चौर—चाँचड़ प्रवासी पक्षियों तथा सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र है। पश्चिम चम्पारण के वाल्मीकि अभ्यारण्य तथा सुपौल जिला स्थित भीम नगर कोसी डैम व कोसी परियोजना पर्यटकीय महत्ता से भरपूर है।

4. महान विभूति की जन्म स्थली व कर्म स्थली :— मिथिला क्षेत्र शुरू से ही दर्शन, साहित्य, कर्मकाण्ड तथा विद्वता में विश्व का अग्रणी सांस्कृतिक भूमि रही है। राजा जनक, याज्ञवल्क्य, कपिल, गौतम, कालिदास, महाकवि विद्यापति, मंडन मिश्र, कुमारिल भट्ट, मैत्रीय व गार्गी, सती अनुसुईया, भारती के विचारों, सिद्धांतों व संस्कारों से सरोकार यह क्षेत्र विश्व संस्कृति के लिए गवेषणा का विषय बना हुआ है तथा इनसे सम्बद्ध स्थल पर्यटक का वाट जोह रहा है।

5. शैक्षिक केन्द्रः— मिथिला में नेपाल स्थिति त्रिभुवन विश्वविद्यालय, (जनकपुर) दरभंगा स्थित ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, चन्द्रधारी मिथिला विज्ञान एवं कला महाविद्यालय अकादमिक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण आकर्षण का केन्द्र है एवं मधेपुरा स्थित भूपेन्द्र नारायण विश्वविद्यालय, भीमराव अम्बेदरकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के लंगट सिंह कॉलेज, गोयनका कॉलेज, सीतामढ़ी , आर0 के0 कॉलेज, मधुबनी अकादमिक आकांक्षा से युक्त प्रवासियों को आकर्षित करती रही है। इसके साथ ही दरभंगा, मधुबनी स्थित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डाक प्रशिक्षण केन्द्र, दरभंगा, महिला अभियंत्रण महाविद्यालय (प्ज्) दरभंगा, पोलिटेकनिक कॉलेज, दरभंगा, आई0 टी0 आई0। मखाना अनुसंधान केन्द्र, मैथिली विद्यापीठ, संग्रहालय, दरभंगा जंक्शन, महाराजा किला, नरगौना भवन, यूरोंपीयन गेस्ट हाउस, राजनगर स्थित महाराजी भवन, अन्य पर्यटकीय आकर्षण से पूर्ण है।

विकासः मिथिला संस्कृति निरंतर विकास की ओर अग्रसर हो रही हैं, भले ही आधुनिकता के दौड़ में इसके स्वरूप में परिवर्तन व कृत्रिमता का समावेश हो गया है। मिथिला संस्कृति और विकास में करण—कारण का संबंध हैं जो निम्न बिन्दुओं के विश्लेष्ण से स्पष्ट हैं:—

1. भाषा—विषयः— क्षेत्र विशेष की बोली कही जाने वाली मैथिली आज बिहार के सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जा रही है। मैथिली में रचित साहित्य व काव्य ग्रंथ, साहित्य अकादमी व ज्ञानपीठ पुरस्कारों के लिए चयनित होने लगी है। मैथिली फिल्म की लोकप्रियता मॉलीवुड से निकलकर मुम्बई के बॉलीवुड तक सफर तय कर लिया है। यहाँ की मधुर बोली का ही प्रतिफल है कि यहाँ के लोग ज्यादा मिलनसार होते हैं। फलतः दुनिया का शांत सांस्कृतिक परिमण्डल का दर्जा प्राप्त करने ही पंक्ति में स्थान बना लिया है। यहाँ का शब्द अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसे मारीशस ग्यूना आदि देशों में लोकप्रियता के साथ प्रचलित है। मैथिली में रामायण, महाभारत की रचना शब्दकोष, गणित व विज्ञान का पुस्तकों का लेखन होने लगा है। मैथिली भाषा के विकास हेतु अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन भी गुआहाटी एवं कोलकाता में हो चुका है।
2. उद्योगः— यहाँ की भौगोलिक बनावट तथा उसके अनुकूल उपजने वाली फसलें, जैसे— मखाना, सिंघारा, धान, तम्बाकू, केला, आम, देशी मछली, ईख. जूट आधारित उद्योगों, खाद प्रसंस्करण क्षेत्र तथा उपभोक्ता बाजार की अपार संभावनाएँ है। दुखद

पक्ष यह है कि यहाँ रैयाम चीनी कारखाना, हसनपुर चीनी कारखाना, सकरी व लोहट का कारखाना, पण्डौल का सूती कारखाना, अशोक पेपर मिल, चावल–दाल कारखाना रुग्नावस्था में है।

3. यातायात व संचारः– बाढ़ की विभीषिका से त्रस्त आज मिथिलांचल में स्वर्णिम चतुर्भुज योजना के तर्ज पर फोरलेन सड़कें बनाई गई। बड़ी रेल लाइनों का जाल बिछाया गया है। एन. एच के साथ–साथ गाँव–गाँव में प्रधानमंत्री सड़क योजना से सडके बनाई जा रही है। रेडियो स्टेशन, एफ.एम. प्रसारण व टेलीविजन प्रसारण नेटवर्क से मैथिली की लोकप्रियता काफी बढ़ी है एवं यह क्षेत्र सूचना क्रान्ति के क्षेत्र में भी आगे बढ़ने लगी है। समय की तकाजा है अब यहाँ एयर टेक्सी सेवा की जरूरतें महसूस की जा रही है।
4. ऊर्जा व स्वास्थ्य सुविधाः– बिजली कमी की समस्या से जूझता मिथिलाचल आज गोबर गैस प्लाट व सोलर ऊर्जा के बल पर क्षेत्र के अंधियारे को उजाले में बदल दिया है। गाँव–गाँव में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्रखण्ड स्तर पर रेफरल अस्पताल व जिला स्तर पर सदर अस्पताल के साथ दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय की शानदार सुविधा प्राप्त है। गाँव–गाँव में जननी सुरक्षा योजना, बाल विकास केन्द्र संचालित हो रहे हैं।
5. कलाकृतियों का अन्तर्राष्ट्रीयकरणः– ग्राम्य महिलाओं द्वारा चित्रित मिथिला पेंटिंग की मांग आज विश्व चित्रकला बाजार में धूम मचा दिया है। इसकी कीमत करोडों में आँकी जा रही है तथा यहाँ इस खास कलाकृति का पेंटेट भी होने लगा है।

समस्याएँ: मिथिला संस्कृति व विकास के क्रम में गहन अध्ययन के उपरान्त कुछ मौलिक समस्याएँ भी सर्वविदित है, जो विकास में बाधा काम कर रहे हैं वह हैः–

1. बाढ़ व सूखाड़ की आवृत्तिः– यह क्षेत्र यहाँ की भौगोलिक बनावट में नदियों की अधिकता तथा भूमि की ढ़ाल एवं जल प्रबंधन की सही तकनीकी अभाव के कारण प्रति वर्ष बाढ़ व सुखाड़ का सामना कर, अपार धन की क्षति उठा रहा है।
2. मजदूर पलायनः– यहाँ के मेहनती मजदूर प्रतिवर्ष, धन रोपनी एवं कटनी के समय पंजाब–हरियाणा की ओर पलायन कर जाते हैं। फलतः यह क्षेत्र मजदूरो की कमी का रोना रोता है. और जिसका असर खेती तथा उद्योगों पर होता है।
3. प्रतिभा पलायनः– यहाँ की धरती प्रतिभाशाली लोगों से भरी पड़ी है फिर भी उन्हें योग्यतानुसार स्थान व सुविधा नहीं मिल पाता है. फलतः यह पलायन को विवश हो रहे हैं।
4. गलत औद्योगिक नीतिः– यहाँ की जलवायु एवं मिट्टी में उपजने वाली फसलों पर आधारित उद्योगों व प्रसंस्करण केन्द्रों का घोर अभाव है। जिसके चलते यह क्षेत्र औद्योगिक पिछड़ेपन का शिकार है।
5. निम्न शिक्षा स्तरः– भारत के सभी राज्यों में बिहार का साक्षरता दर निम्न है और बिहार में मिथिला क्षेत्र की अवसंरचना, यातायात की कमी तथा शिक्षण संस्थानो की कमी के कारण यह क्षेत्र बिहार के शिक्षा के क्षेत्र में अलग पहचान बनाने के बावजूद भी साक्षरता में पीछे है।
6. ऊर्जा का अभावः– यहाँ थर्मल पावर स्टेशन, जल विद्युत केन्द्र आदि का घोर अभाव है, जो विकास को प्रभावित कर रहा है।
7. अंध विश्वासः– आज भी मिथिला क्षेत्र में, जादू–टोना, डायन प्रथा, तथा भगत–भगताइन को प्रति लोगों का विश्वास अटूट है जो अंधविश्वास को बढ़ावा दे रहा है।
8. उच्च प्रौद्योगिकी संस्थानों की कमी,
9. बढ़ती जनसंख्या घनत्व
10. जंगलों की अंधाधुंध कटाई
11. कृषि में कीटनाशकों के बढ़ते प्रवृति के कारण देशी मछलियों की प्रजातियों का निर्मूलन।
12. सांस्कृतिक, बदलाव, बदले परिवेश व विकास की अंधी दौड़ में प्राकृतिक भावों के जगह कृत्रिम तरीकों को अपनाया जाना।

उपरोक्त समस्याएँ मिथिला क्षेत्र के विकास के मार्ग में अवरोधक है।

अतः इस समस्या के निदानार्थ पूर्वजो की महान धरोहर रूपी संस्कृति को अक्षुण्ण रखना जरूरी है।

निदान: मिथिला सांस्कृतिक परिमण्डल में व्याप्त हो रही पर्यावरणीय, सांस्कृति व औद्योगिक क्षरण को नियंत्रित करने हेतु निम्न सुधार जरूरी हैः–

1. नदियों– तालाबों व चौरों को आपस में जोड़ना, ताकि जल प्रबंधन द्वारा बाढ़–सुखाड़ से मुक्ति एवं मछली व मखाना खेती को प्रोत्साहन देने हेतु सरकारी नीति बनाना।
2. वन संरक्षण व जैव संरक्षण से जुड़ी धार्मिक मान्यताओं को संवर्द्धन करना।
3. कृषि आधारित उद्योगों का जीर्णोद्धार तथा फल आधारित उद्योगों एवं खाद्य प्रस्करण केन्द्र की स्थापना।

4. कृषि कार्य में प्रयुक्त व रासायनिक उर्वरक व कीटनाशक के जगह कृषि के साथ पशुपालन व जैविक खाद्य का प्रयोग।
5. पुरातात्विक खुदाई तथा ऐतिहासिक स्थलों की महत्ता पर शोध कार्य को बढ़ावा देना।
6. पाण्डुलिपि का प्रकाशन।
7. मजदूर व प्रतिभापलायन को रोकने हेतु सशक्त उपाय।
8. यहाँ के तमाम धार्मिक, ऐतिहासिक व प्राकृतिक रमणीयता वाले स्थानों को अत्याधुनिक यातायात नेटवर्क से जोड़कर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक मानचित्र में स्थान मिलना जरूरी है तथा इसके समन्वित विकास का कार्यक्रम बनाना भी जरूरी है।

संभावनाएँः यहाँ की भौगोलिक बनावट, समशीतोष्ण जलवायु तथा तद्जन्य कृषि, प्रणाली रीति–रिवाज, प्रथा, परम्पराओं, धार्मिक आस्थाओं व खान–पान की प्रकृति ने पर्यावरण तथा विकास की अपार संभावनाओं का द्वार खोल रहा है। जो इस तरह हैः–

1. अति उर्वर भूमि की स्वामिनीः– नदियों की बहुलता व प्रतिवर्ष आनेवाली बाढ़ से नवीन जलोढ़ खादर मिट्टी की परत बिछने की आवृति तथा खेती के साथ पशुपालन, उर्वरकों में गोबर, नीम की खल्ली का प्रयोग एवं जगह–जगह चौड–चाँचड़, तालाब–पोखर के कारण नमीयुक्त भूमि के कारण यहाँ, फसलों में धान, गेहूँ, दलहन, तेलहन, रागी, फलों में, आम, लीची, कटहल, केला तथा नकदी फसलों में तम्बाकू, आलू गन्ना एवं रेशे वाली फसलों में जूट की खेती प्रचलित है। अतः इन फसलों पर आधारित उद्योगों का भविष्य अच्छा है। मछली पालन, मखाना खेती, पान की खेती के लिए यहाँ की बनावट व जलवायु दोनो आदर्श है।
2. श्रम शक्ति की सुलभताः– यहाँ के मजदूर मुम्बई अहमदाबाद के सूती कारखानों, कोलकाता के जूट कारखानों, पंजाब, हरियाणा के खेतों व दिल्ली के फूटपाथों पर अपना परिश्रम कर वहाँ के विकास में चार–चाँद लगा रहा है। यदि इस श्रम शक्ति का उपयोग यहाँ के विकास हेतु हो तो मिथिला को शिथिला नहीं कहा जा सकता है। यह विकास में अग्रणी हो जायेगा।
3. प्रचूर जल संसाधन की उपलब्धताः– यहाँ नदियों, तालाबों, चौरों व टालों की भरमार है. जो विविध प्रकार की जलीय जीवों का आश्रय व प्रवासी पक्षियों के आकर्षण के साथ महत्वपूर्ण वेटलैण्ड का दृश्य उपस्थित करता है। मखाना, सिंधारा, करहर की खेती, देशी मछली की खेती, सिंचाई एवं जलविद्युत के प्राप्ति की संभावनाएँ अपार है। साथ ही इसका प्रभाव यहाँ के पर्यावरणीय स्वच्छता पर भी अमिट है।
4. वनों व जैव विविधताओं का धनी क्षेत्रः– यहाँ के मैदानी भागों में, आम, लीची, केला, कटहल एवं महुआ के कुंजों की बहुलता है, जो यहाँ के मौसम व इस पर पालित जीवों के लिए महत्वपूर्ण है। तराई क्षेत्रों में उपलब्ध झुड़मुठ, झाड़ियों व जड़ी–बुटियाँ का औषधीय महत्व है। संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि यहाँ जल, जंगल, उर्वरजमीन व जनाधिक्य तथा पर्यावरणीय जनरीति के प्रचूरता है।

निष्कर्षः– मिथिला की भौगोलिक बनावट, स्थलाकृति नदियों की बहुलता, वनों एव पशु–पक्षियों की प्रचूरता एवं यहाँ की जलवायु के परिप्रेक्ष्य में पल्लवित, पुष्पित मिथिला सस्कृति पर्यावरण, पर्यटन व विकास के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र है। प्रकृति के सभी तत्वों, भूमि, जल, वनस्पति, जीव जन्तुओं के प्रति मित्रता भाव ही हमारी उन्नति का राज है। अतः इसका संरक्षण जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. **Souvenir Cum Abstract Annual Conference and National Seminar, L.N.M.U., Darbhanga.**
2. **Daily Hindustan 10 August 1994, 3 Feb. 2001 Page-4, 2000, Page-16, by Dr. Dayanand jha, April-2005 page-12, 19 Feb. 2013, page-05-06.**
3. **Daily Prabhat Khabar -20 Feb,2013- Page-4-5, 26 Feb. 2012 page-1**
4. **Resource Management and sustainable Jha Dr. Vinay Nath. Geographical Development a case study of North Bihar. Perspective. volume No.13 year -2012,page-94**
5. **Souvenir Cum abstract XI Annual conference and National Seminar, L.N.M.U., Darbhanga. Topic-facts of historical prospects.**
6. **Kumari Poonam-Population Resource regions, Darbhanga, Bihar-Geographical perspective- Volume-13, year-2012, page-54.**
7. **Daily Newspaper Hindustan on 22-02, 2012, of Eco-tourism in Bihar.**
8. **Economic Summary, page- 14, Report-2012-13- 15.**

***